19-12-2022

स्वीट सोरयम (मीठी घरी) के डंठल (तने) से प्राप्त रस से इथेनॉल का उत्पादन

मुंबई मे एक इंडस्ट्री मीठी चरी पर काम शुरू किया

दैनिक देश मोर्चा संवाददाता
मनी वर्मा

कानपुर। राष्ट्रीय शर्करा संस्थान कानपुर के वैज्ञानिकों ने स्वीट सोरयम (मीठी घरी) को बहुउद्देश्यीय फसल के रूप में परिवर्तित करने में सफलता प्राप्त की है जबकि फसल के शीर्ष भाग में ज्वार के दानों का उपयोग भोजन के रूप में किया जाता है. डंठल तने) का उपयोग कई अन्य उद्देश्यों के लिए किया जा सकता है, जिससे उसको केवल चारे के रूप में उपयोग करने के बजाय मूल्यवर्धन प्राप्त हो सकता है इस उद्देश्य के लिए, संस्थान ने आईसीएआर- इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ मिलेट्स रिसर्च, हैदराबाद के सहयोग से संस्थान, के खेत ग्यारह स्वीट सौरचम (मीठी चरी किल्मों का परीक्षण शुरू किया इसमें से पांच किस्में सीएसएच 22 एसएसएसएसी 84 एसएसवी 74 फुले वसुंधरा और आईसीएसएसएच 28 को उपोष्ण कटिबंधीय क्षेत्र में खेती के लिए उपयुक्त पाया गया कृषि रसायन विज्ञान के सहायक प्रोफेसर डॉ. अशोक कुमार ने कहा हमारा ध्यान उत्तरी भारत में स्वीट सोरम (मीठी चरी) की किस्मों की गुणवत्ता और उत्पादकता का आकलन करने पर था संस्थान ने स्वीट सोरघम मीठी बरी के डंठल तने से मूल्य वर्धित उत्पादों के उत्पादन के लिए प्रौद्योगिकी विकसित करने पर ध्यान केंद्रित किया, ताकि बड़े पैमाने पर किसानों को लाभान्वित करने वाली पूरी स्वीट सोरघम (मीठी चरी) मूल्य श्रृंखला की क्षमता का दोहन किया जा सके क्योंकि ऐसा होने पर उन्हें इसके लिए बेहतर कीमत मिलेगी सबसे पहले हमारा उद्देश्य इथेनॉल के उत्पादन के लिए स्वीट सोरघम (मीठी चरी) के उठत (तने) से प्राप्त रस से इथेनॉल उत्पादन की प्रक्रिया विकसित करना था, जिसका संस्थान के पायलट प्लाट में डॉ. सीमा परोहा प्रोफेसर बायोकेमिस्ट्री की देखरेख में सफलतापूर्वक परीक्षण किया गया, जिससे 50-55 लीटर प्रति टम इथेनॉल उत्पादन प्राप्त हुआ, श्री नरेंद्र मोहन, निदेशक, राष्ट्रीय शर्करा संस्थान, कानपुर ने कहा इसके साथ ही संस्थान ने स्वीट सोरघम (मीठी चरी) के डंठल (तने) की पेराई के परिणामस्वरूप प्राप्त रेशेदार सामग्री (खोई) के उपयोग पर काम किया। शुगर इंजीनियरिंग के सहायक प्रोफेसर श्री अनूप कुमार कनौजिया ने कहा कि यह देखा गया कि इसका कैलोरी मान लगभग 2100 किलो कैलोरी / किग्रा है और इस प्रकार बायोमास आधारित स्वच्छ और हरित बिजली के उत्पादन के लिए ईधन के रूप में इसकी खोई का इस्तेमाल किया जा सकता है हमें इसकी लोई से डायटरी फाइबर और बायोचार बनाने में भी सफलता मिली है। राष्ट्रीय शर्करा संस्थान के निदेशक ने कहा जहाँ रक्त शर्करा और कोलेस्ट्रॉल के स्तर एवं पाचन तंत्र को नियंत्रित करने में कई फायदों के कारण डाइटरी फाइबर का व्यापक रूप से उपयोग किया जा रहा है, वहीं बापो बार का उपयोग सिरप और अपशिष्ट जल के शुद्धिकरण में किया जा सकता है मैसर्स यूपीएल लिमिटेड, मुंबई ने स्वीट सोरघम (मीठी चरी) पर आधारित एक इथेनॉल संयंत्र स्थापित करने की योजना बनाई है और जिसके लिए वे पहले से ही संस्थान के साथ वार्ता कर रहे हैं।

मीठी चरी की पांच प्रजातियां मुफीद मिलीं

अमृत विचार, कानपुर

उत्तर भारत में खेती और कृषि के अन्य उत्पाद तैयार करने के लिए स्वीट सोरघम (मीठी चरी) की पांच प्रजातियां मुफीद पाई गई हैं। राष्ट्रीय शर्करा संस्थान (एनएसआई) ने हैदराबाद के इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ मिलेट्स रिसर्च के सहयोग से 11 प्रजातियों पर शोध किया, जिसमें से सीएसएच 22, एसएसवी 84, एसएसवी 74, फुले वसुंधरा, आईसीएसएसएच शामिल हैं। इनकी उत्पादकता, गुणवत्ता और रोग प्रतिरोगक क्षमता बेहतर मिली है। एनएसआई की ओर से पांचों प्रजातियों से ज्वार, तने से इथेनॉल और उसकी खोई से पानी का फिल्टर व डाइटरी फाइबर तैयार किया है।

एनएसआई के निदेशक प्रो. नरेंद्र मोहन मिठी चरी का प्लांट को देखते हुए।

निदेशक प्रो. नरेंद्र मोहन ने बताया कि अब तक मीठी चरी को सिर्फ चारे के रूप में ही जाना जाता था, लेकिन संस्थान में इथेनॉल के साथ ही उसके सह उत्पाद तैयार किए गए हैं। बायोकेमिस्ट्री विभाग की प्रो. सीमा परोहा के निर्देशन में स्वीट सोरघम का प्लांट संचालित किया जा रहा है। यहां 50 से 55 लीटर प्रति टन इथेनॉल मिल रहा है। शुगर इंजीनियरिंग के सहायक प्रोफेसर अनूप कुमार कनौजिया के मुताबिक मिठी चरी के तने की पेराई के बाद उसमें प्रति किलोग्राम में 2100 किलो कैलोरी होती है। ऐसे में यह बायो फ्यूल या ग्रीन ईंधन के रूप में इस्तेमाल किया जा सकता है।

सफलता

- एनएसआई के तीन साल तक शोध से निकला परिणाम

महाराष्ट्र में खुलेगा नया प्लांट

मुंबई की यूपीएल लिमिटेड कंपनी एनएसआई के सहयोग से महाराष्ट्र मे मिठी चरी आधारित इथेनॉल संयंत्र स्थापित करने जा रही है। इसको लेकर जल्द ही संस्थान और कंपनी के बीच एमओयू साइन किया जाएगा।

आज
महानगर

बल्ड शुगर और कोलेस्ट्राल का स्तर नियंत्रित करती है मीठी चरी

सिरप व अपशिष्ट जल के शुद्धीकरण में किया जा सकता है बायो-चार का उपयोग

जल शुद्धीकरण को देखते निदेशक प्रो. नरेन्द्र मोहन।

(आज समाचार सेवा)

कानपुर, 18 दिसम्बर। राष्ट्रीय शर्करा संस्थान कानपुर के वैज्ञानिकों ने स्वीट सोरघम (मीठी चरी) को बहुउद्देश्यीय फसल के रूप में परिवर्तित करने में सफलता प्राप्त की है। जबकि फसल के शीर्ष भाग में ज्वार के दानों का उपयोग भोजन के रूप में किया जाता है। डंठल (तने) का उपयोग कई अन्य उद्देश्यों के लिए किया जा सकता है जिससे उसको केवल चारे केरूप में उपयोग करने के बजाय मूल्यवर्धन प्राप्त हो सकता है। इस उद्देश्य के लिए एनएसआई ने आईसीआर-इंडियन इंस्टीट्यूट आफ मिलेटस रिसर्च, हैदराबाद के सहयोग से संस्थान के खेत में ग्यारह स्वीट सोरघम (मीठी चरी) किस्मों का परीक्षण शुरू किया। इसमें से पांच किस्मे, सीएसएच 22 एसएस, एसएसवी 84, एसएवी 74, फुले वसुंधरा और आईसीएसएसएच 28 को उपोष्णकटिबंधीय क्षेत्र में खेती के लिए उपयुक्त पाया गया। कृषि रसायन विज्ञान के सहायक प्रो. डा. अशोक कुमार ने कहाकि हमारा ध्यान उत्तरी भारत में स्वीट सोरघम (मीठी चरी) की किस्मों की गुणवत्ता और उत्पादकता का आकलन करने पर था। स्वीट सोरघम के डंठल (तने) से मूल्य वर्धित उत्पादों के उत्पादन के लिए प्रौद्योगिकी विकसित करने पर ध्यान केंद्रित किया ताकि बड़े पैमाने पर मीठी चरी मूल्य श्रृंखला की क्षमता का दोहन किया जा सके। सबसे पहले हमारा उद्देश्य इथेनाल के उत्पादन के लिए मीठी चरी के डंठल से प्राप्त रस से इथेनाल उत्पादन की प्रक्रिया विकसित करना था। जिसका संस्थान के पायलट प्लांट में डा. सीमा परोहा की देखरेख में सफलतापूर्वक परीक्षण किया गया। जिससे 50-55 लीटर प्रति टन इथेनाल उत्पादन प्राप्त हुआ। एनएसआई के निदेशक प्रो. नरेंद्र मोहन ने कहाकि संस्थान के वैज्ञानिकों ने मीठी चरी के डंठल की पेराई परिणाम स्वरूप प्राप्त रेशेदार सामग्री (खोई) के उपयोग पर काम किया। सह. प्रो. अनूप कुमार कनौजिया ने कहाकि इसका कैलोरी मान लगभग 2100 किलो कैलोरी/किलोग्राम है और इस प्रकार बायो-मास आधारित स्वच्छ और हरित बिजली के उत्पादन के लिए ईंधन के रूप में इसकी खोई का इस्तेमाल किया जा सकता है। हमें इसकी खोई से डायटरी फाइबर और बायोचार बनाने में भी सफलता मिली है। निदेशक ने बताया कि जहां रक्त शर्करा और कोलेस्ट्राल के स्तर एवं पाचन तंत्र को नियंत्रित करने में कई फायदों के कारण डाइटरी फाइबर का व्यापक रूप से उपयोग किया जा सकता है। वहीं बायो-चार का उपयोग सिरप और अपशिष्ट जल के शुद्धिकरण में किया जा सकता है। मैसर्स यूनीएल लि. मुंबई ने स्वीट सोरघम (मीठी चरी) पर आधारित एक इथेनाल संयंत्र स्थापित करने की योजना बनाई है और जिनके लिए वे पहले से ही संस्थान से बातचीत जारी है।

मीठी चरी के तने से प्राप्त हुआ था 50-55 लीटर प्रति टन इथेनाल

शर्करा संस्थान ने मीठी चरी पर शोध पर पाई सफलता

नगराज दर्पण समाचार

कानपुर। राष्ट्रीय शर्करा संस्थान, के वैज्ञानिकों ने स्वीट सोरघम (मीठी चरी) को बहुउद्देश्यीय फसल के रूप में परिवर्तित करने में सफलता प्राप्त की है। जबकि फसल के शीर्ष भाग में ज्वार के दानों का उपयोग भोजन के रूप में किया जाता है, डंठल (तने) का उपयोग कई अन्य उद्देश्यों के लिए किया जा सकता है, जिससे उसको केवल चारे के रूप में उपयोग करने के बजाय मूल्यवर्धन प्राप्त हो सकता है।

राष्ट्रीय शर्करा संस्थान के निदेशक नरेंद्र मोहन ने बताया कि संस्थान ने आईसीएआर-इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ मिलेट्स रिसर्च, हैदराबाद के सहयोग से संस्थान के खेत में ग्यारह स्वीट सोरघम (मीठी चरी) किस्मों का परीक्षण शुरू किया। इसमें से पांच किस्में, सीएसएच 22 एसएस, एसएसवी 84, एसएसवी 74, फुले वसुंधरा और आईसीएसएसएच 28 को उपोष्णकटिबंधीय क्षेत्र में खेती के लिए उपयुक्त पाया गया। कृषि रसायन विज्ञान के सहायक प्रोफेसर डॉ. अशोक कुमार ने कहा, हमारा ध्यान उत्तरी भारत में स्वीट सोरघम (मीठी चरी की किस्मों की गुणवत्ता और उत्पादकता का आकलन करने पर था। संस्थान ने स्वीट सोरघम (मीठी चरी) के डंठल (तने) से मूल्य वर्धित उत्पादों के उत्पादन के लिए प्रौद्योगिकी विकसित करने पर ध्यान केंद्रित किया, ताकि बड़े पैमाने पर किसानों को लाभान्वित करने वाली पूरी स्वीट सोरघम (मीठी चरी) मूल्य श्रृंखला की क्षमता का दोहन किया जा सके क्योंकि ऐसा होने पर उन्हें इसके लिए बेहतर कीमत मिलेगी। सबसे पहले, हमारा उद्देश्य इथेनॉल के उत्पादन के लिए स्वीट सोरघम (मीठी चरी) के डंठल (तने) से प्राप्त रस से इथेनॉल उत्पादन की प्रक्रिया विकसित करना था, जिसका संस्थान के पायलट प्लांट में डॉ. सीमा परोहा, प्रोफेसर बायोकैमिस्ट्री की देखरेख में सफलतापूर्वक परीक्षण किया गया, जिससे 50-55 लीटर प्रति टन इथेनॉल उत्पादन प्राप्त हुआ। राष्ट्रीय शर्करा संस्थान के निदेशक नरेंद्र मोहन ने कहा संस्थान ने स्वीट सोरघम (मीठी चरी) के डंठल (तने) की पेराई के परिणामस्वरूप प्राप्त रेशेदार सामग्री, (खोई) के उपयोग पर काम किया।

एनएसआई ने हासिल की एक और सफलता

मीठी चरी बहुउद्देशीय फसलों में होगी परिवर्तित

कानपुर (नगर छाया समाचार)। राष्ट्रीय शर्करा संस्थान, कानपुर के वैज्ञानिकों ने स्वीट सोरघम (मीठी चरी) को बहुउद्देश्यीय फसल के रूप में परिवर्तित करने में सफलता प्राप्त की है। जबकि फसल के शीर्ष भाग में ज्वार के दानों का उपयोग भोजन के रूप में किया जाता है, डंठल (तने) का उपयोग कई अन्य उद्देश्यों के लिए किया जा सकता है, जिससे उसको केवल चारे के रूप में उपयोग करने के बजाय मूल्यवर्धन प्राप्त हो सकता है।

इस उद्देश्य के लिए, संस्थान ने आईसीएआर-इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ मिलेट्स रिसर्च, हैदराबाद के सहयोग से संस्थान के खेत में ग्यारह स्वीट सोरघम (मीठी चरी) किस्मों का परीक्षण शुरू किया। इसमें से पांच किस्में, सीएसएच 22 एसएस, एसएसवी 84, एसएसवी 74, फुले वसुंधरा और आईसीएसएसएच 28 को उपोष्णकटिबंधीय क्षेत्र में खेती के लिए उपयुक्त पाया गया। कृषि रसायन विज्ञान के सहायक प्रोफेसर डॉ. अशोक कुमार ने कहा, हमारा ध्यान उत्तरी भारत में स्वीट सोरघम (मीठी चरी) की किस्मों की गुणवत्ता और उत्पादकता का आकलन करने पर था।

संस्थान ने स्वीट सोरघम (मीठी चरी) के डंठल (तने) से मूल्य वर्धित उत्पादों के उत्पादन के लिए प्रौद्योगिकी विकसित करने पर ध्यान केंद्रित किया, ताकि बड़े पैमाने पर किसानों को लाभान्वित करने वाली पूरी स्वीट सोरघम (मीठी चरी) मूल्य श्रृंखला की क्षमता का दोहन किया जा सके क्योंकि ऐसा होने पर उन्हें इसके लिए बेहतर कीमत मिलेगी। सबसे पहले, हमारा उद्देश्य इथेनॉल के उत्पादन के लिए स्वीट सोरघम (मीठी चरी) के डंठल (तने) से प्राप्त रस से इथेनॉल उत्पादन की प्रक्रिया विकसित करना था, जिसका संस्थान के पायलट प्लांट में डॉ. सीमा परोहा, प्रोफेसर बायोकैमिस्ट्री की देखरेख में सफलतापूर्वक परीक्षण किया गया, जिससे 50-55 लीटर प्रति टन इथेनॉल उत्पादन प्राप्त हुआ, श्री नरेंद्र मोहन, निदेशक, राष्ट्रीय शर्करा संस्थान, कानपुर ने कहा।

इसके साथ ही संस्थान ने स्वीट सोरघम (मीठी चरी) के डंठल (तने) की पेराई के परिणामस्वरूप प्राप्त रेशेदार सामग्री, (खोई) के उपयोग पर काम किया। शुगर इंजीनियरिंग के सहायक प्रोफेसर श्री अनूप कुमार कनौजिया ने कहा कि यह देखा गया कि इसका कैलोरी मान लगभग 2100 किलो कैलोरी/किग्रा है और इस प्रकार बायो-मास आधारित स्वच्छ और हरित बिजली के उत्पादन के लिए ईंधन के रूप में इसकी खोई का इस्तेमाल किया जा सकता है। हमें इसकी खोई से डायटरी फाइबर और बायोचार बनाने में भी सफलता मिली है। राष्ट्रीय शर्करा संस्थान के निदेशक ने कहा, जहाँ रक्त शर्करा और कोलेस्ट्रॉल के स्तर एवं पाचन तंत्र को नियंत्रित करने में कई फायदों के कारण डाइटरी फाइबर का व्यापक रूप से उपयोग किया जा रहा है, वहीं बायो-चार का उपयोग सिरप और अपशिष्ट जल के शुद्धिकरण में किया जा सकता है।

मैसर्स यूपीएल लिमिटेड, मुंबई ने स्वीट सोरघम (मीठी चरी) पर आधारित एक इथेनॉल संयंत्र स्थापित करने की योजना बनाई है और जिसके लिए वे पहले से ही संस्थान के साथ बातें कर रहे हैं।

हिन्दुस्तान
www.livehindustan.com

अपना कानपुर

जानवरों के भोजन से बनेगी ग्रीन एनर्जी, डाइटरी फाइबर व बायोचार

पहल

03 साल की रिसर्च के बाद एनएसआई के वैज्ञानिकों ने हासिल की बड़ी कामयाबी

01 किलो रेशेदार सामग्री में 21 सौ किलो कैलोरी, इसके उपयोग से ग्रीन एनर्जी बनी

- राष्ट्रीय शर्करा संस्थान के वैज्ञानिकों ने विकसित की तकनीक
- साइंटिस्टों ने खोजी तकनीक, डंठल से तैयार किए चार उत्पाद

कानपुर, वरिष्ठ संवाददाता। जानवरों के भोजन यानी मीठी चरी से अब इथेनॉल ही नहीं, बल्कि ग्रीन एनर्जी, डाइटरी फाइबर और बायोचार भी तैयार होगा। इस तकनीक से न सिर्फ ग्रीन एनर्जी काफी सस्ती मिलेगी बल्कि पर्यावरण भी शुद्ध रहेगा। तीन साल की रिसर्च के बाद यह कामयाबी हासिल की है राष्ट्रीय शर्करा संस्थान के वैज्ञानिकों ने। शोध मीठी चरी (स्वीट सोरघम) की पांच अलग-अलग प्रजातियों पर किया गया है।

एनएसआई के निदेशक प्रो. नरेंद्र मोहन की अगुवाई में साइंटिस्ट गन्ना और शीरे के साथ अन्य खाद्यान्न फसलों पर भी रिसर्च कर रहे हैं। सबसे पहले मीठी चरी से इथेनॉल बनाने के लिए रिसर्च शुरू की गई। बायोकेमिस्ट्री की प्रो. सीमा परोहा की देखरेख में इथेनॉल तैयार हो गया। एक टन में 50 से 55 लीटर इथेनॉल का उत्पादन हुआ। वैज्ञानिकों को इस प्रक्रिया के बाद रेशेदार सामग्री मिली। टीम ने शुगर इंजीनियरिंग के प्रो. अनूप कनौजिया की देखरेख में इस पर भी शोध शुरू किया। एक किलो रेशेदार सामग्री में 2100 किलो कैलोरी पाई गई। इसका उपयोग कर ग्रीन एनर्जी विकसित की। इस सामग्री से डाइटरी फाइबर व बायोचार भी प्राप्त हुआ।

वैज्ञानिकों की ओर से इन प्रजातियों पर हुई रिसर्च

प्रो. मोहन के मुताबिक यह शोध आईसीएआर-इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ मिलेट्स रिसर्च हैदराबाद के साथ मिलकर किया गया है। हैदराबाद से स्वीट सोरघम की पांच प्रजातियों सीएसएच 22 एसएस, एसएसवी 84, एसएसवी 74, फुले वसुधरा व आईसीएसएसएच 28 पर अध्ययन किया गया।

स्वीट सोरघम बढ़ाएगा किसानों की आय

नरेंद्र मोहन का कहना है कि किसान स्वीट सोरघम की पैदावार करते हैं। अभी तक इसके दाने को ज्वार के रूप में खाने के लिए इस्तेमाल किया जाता है। बाकी डंठल जानवरों को खाने के लिए दिया जाता है। अब इस डंठल से इथेनॉल, ग्रीन एनर्जी, डाइटरी फाइबर व बायोचार तैयार होगा। इससे किसानों की आय में वृद्धि होगी।

ये होंगे लाभ

1. इथेनॉल: पेट्रोल में मिश्रण का लक्ष्य पूरा होगा।
2. ग्रीन एनर्जी: बिना वातावरण को नुकसान पहुंचाए बिजली का उत्पादन होगा।
3. डाइटरी फाइबर: रक्त शर्करा व कोलेस्ट्रॉल के स्तर व पाचन तंत्र नियंत्रित करने में उपयोग होता है।
4. बायोचार: सिरप व अपशिष्ट जल के शुद्धिकरण में किया जाता है।

> मीठी चरी की पांच प्रजातियों पर रिसर्च हुई है। जानवरों को खिलाए जाने वाले डंठल से इथेनॉल, ग्रीन एनर्जी, डाइटरी फाइबर व बायोचार के उत्पादन करने की तकनीक विकसित कर ली गई है। इससे किसानों को काफी लाभ होगा। साथ ही, इथेनॉल व ग्रीन एनर्जी का उत्पादन भी सस्ता होगा। -प्रो. नरेंद्र मोहन, निदेशक राष्ट्रीय शर्करा संस्थान

राष्ट्रीय सहारा
www.rashtriyasahara.com

मीठी चरी बनी बहुउद्देश्यीय फसल

कानपुर (एसएनबी)। मुख्यतः ज्वार व पशुओं के लिए चारा के लिए उपयोग किये जाने वाले स्वीट सोरघम (मीठी चरी) की फसल को राष्ट्रीय शर्करा संस्थान के वैज्ञानिकों ने बहुउद्देश्य फसल के रूप में परिवर्तित करने में सफलता प्राप्त की है। संस्थान के प्रयासों ने यूपीएल लिमिटेड ने मीठी चरी पर आधारित इथेनॉल संयंत्र स्थापित करने की योजना बनाई है।

मीठी चरी के शीर्ष भाग में ज्वार के दानों का उपयोग भोजन के लिए करने के साथ ही अब इसके डंठल का उपयोग कई अन्य उद्देश्यों के लिए किया जा सकता है। इससे यह फसल अब मूल्यवर्धक फसल में शामिल हो गई है। संस्थान ने मीठी चरी के डंठल (तने) से मूल्यवर्धित उत्पादों के उत्पादन के लिए प्रौद्योगिकी विकसित करने पर ध्यान केन्द्रित किया, ताकि किसानों की आय बढ़ सके। संस्थान ने इससे इथेनाल बनाने में सफलता पाई। संस्थान निदेशक प्रो. नरेन्द्र मोहन ने बताया कि पायलट प्लांट में प्रोफेसर बायोकेमेस्ट्री डॉ. सीमा परोहा के पर्यवेक्षण में सफलतापूर्वक इसका परीक्षण किया गया। परीक्षण में मीठी चरी के तनों से प्रति टन 50-55 लीटर इथेनॉल प्राप्त हुआ। इसके साथ ही मीठी चरी की खोई से फायबर डायटरी व बायोचार का उत्पादन भी किया जा सकता है। संस्थान के शुगर इंजीनियरिंग के प्रोफेसर अनूप कुमार कनौजिया ने बताया कि इस खोई का इस्तेमाल बायोमास आधारित स्वच्छ व हरित बिजली उत्पादन के लिए ईंधन के रूप में किया जा सकता है। मीठी चरी पर शोध के तहत शर्करा संस्थान ने आईसीएआर-इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ मिलेट्स रिसर्च, हैदराबाद के सहयोग से संस्थान फार्म पर मीठी चरी के 11 किस्मों पर परीक्षण किया जा रहा है। कृषि रसायन विभाग के सहायक प्रोफेसर डॉ.अशोक कुमार का कहना है कि हमारा ध्यान उत्तरी भारत में मीठी चरी की किस्मों की गुणवत्ता व उत्पादकता का आंकलन करने पर है, ताकि बेहतर किस्मों को प्रोत्साहित किया जा सके।

> मीठी चरी की खोई से इथेनॉल के साथ ही बनाये जा सकते हैं फायबर डायटरी व बायोचार